नया ज्ञानोदय

अगस्त 2018
पृष्ठ 96
40 रुपये

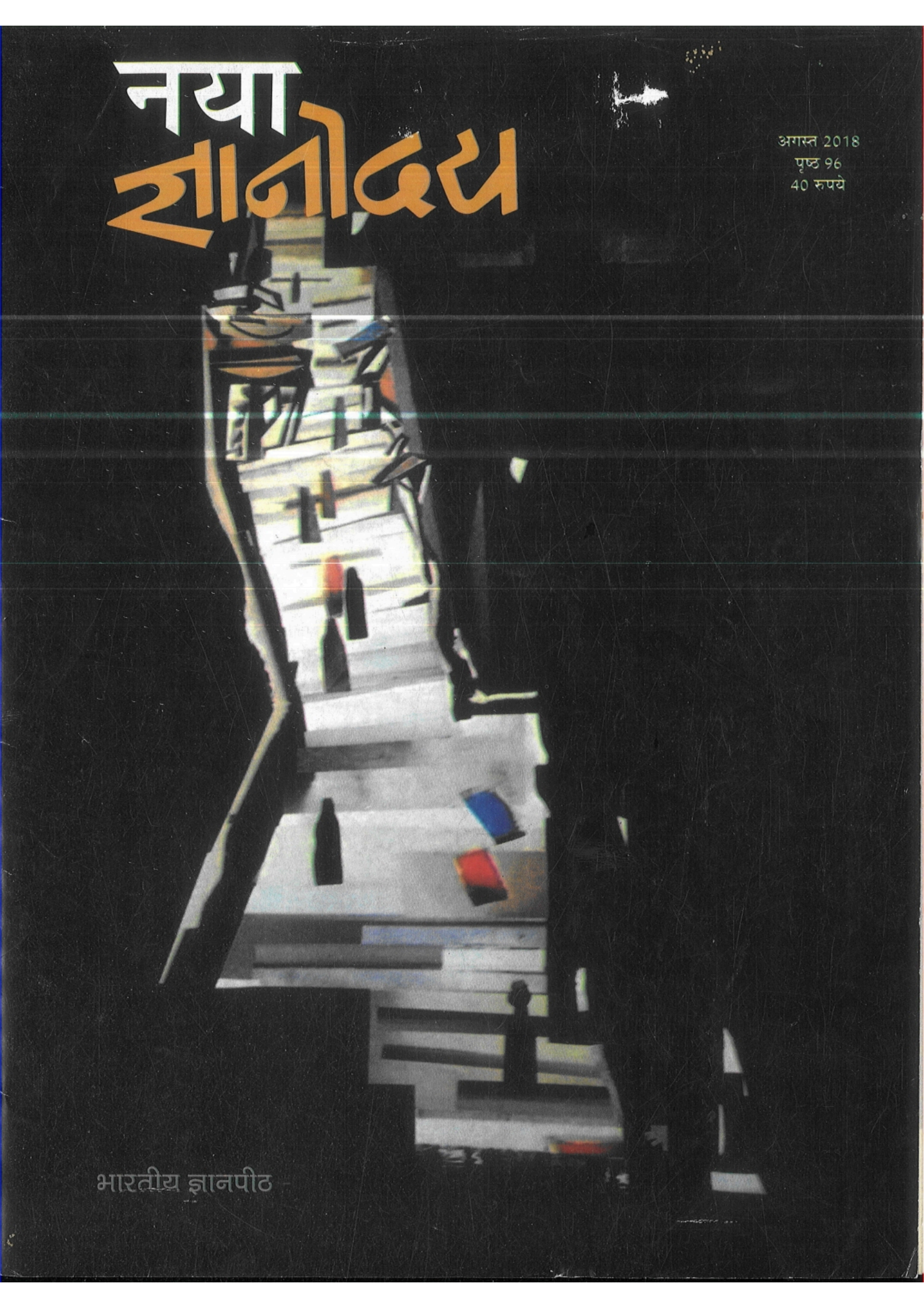

भारतीय ज्ञानपीठ

अस्पृश्य रहने दो हमारे पिताओं की चमचमाती पीठ को
तुम्हारे क्रूर चाबुकों से,
दूर रखो तुम्हारे खून से सने हाथ
हमारी ज्वार-बाजरे की रोटियों से,
हत्यारों के साथ बैठ कर भोजन करना
अपने ही शिशुओं के कलेजे के व्यंजन खाने जैसा है,
अस्पृश्य ही रहने दो
हमारे खेतों में झूमती फसलों को
तुम लुटेरों के स्पर्श से,
भले ही अस्पृश्य रह जाएँ हमारे गाँव
तुम्हारे द्वारा जलाई हुई सर्वनाश की अग्नि ज्वालाओं से
सदियों से तुमने नहीं छुआ
सूर्य की आत्मा जैसे हमारे श्याम वर्ण को,
तो अब छूने की कोई जरूरत नहीं है
हमें स्पर्श करेगा
मध्याह्न के सूर्य का उज्ज्वल प्रकाश
खेतों की मिट्टी
और नदी का बहता जल...
दूर रहो,
मत स्पर्श करो हम अस्पृश्यों को।

रोटी

रोटी सबको चाहिए
हर रोज चाहिए
पर कोई नहीं करता बात रोटी की
कवि शर्माता है
रोटी की कविता लिखने में
अर्थशास्त्री करता है बात
मार्केट इकॉनोमी की
समाजशास्त्री करता है समाज का वर्गीकरण
वैज्ञानिक करता है संशोधन अन्तरिक्ष में
किसी राष्ट्र ने राष्ट्रध्वज में
रोटी का चिन्ह नहीं रखा
मैं भी रोटी की इतनी ही बात करके
—इति सिद्धम कहता हूँ
रोटी सबको चाहिए
रोज चाहिए
पर कोई नहीं करता बात रोटी की ।

गुजराती से अनुवाद : मालिनी गौतम

मो.: 9427078711

अँग्रेज़ी कविता

सुकृता पॉल कुमार

[अँग्रेज़ी की सुप्रसिद्ध लेखिका]

चूड़ियाँ पहनने की कला

ख़ाली पन्ना पहनता है शब्द
उसी शौक और सब्र से
जैसे लड़कियाँ
पहनती हैं काँच की चूड़ियाँ
एक-एक कर, ध्यान से, धीरे-धीरे

एकदम सही माप की
न चटके, न खुरचें
वो दबती कलाइयाँ ब्रह्मचर्य ब्रह्मचर्य
गुज़रती हैं जो उन गोलाइयाँ से
बहुत ढीली, लटकती हुई नहों
न इतनी तंग कि टकरा जाएँ त्वचा से

झंकृत होने दो उन्हें
उल्लास में छलकने दो, गति में थिरकने दो
नृत्य में लय हो जाने दो
जैसे कविता होती है पन्ने में।

शूलीभंजन मन्दिर

हर सुबह पौ फटते ही
शूलीभंजन में
जब मन्दिर की घंटियाँ बजती हैं
और आरती भर लेती है
सूक्ष्म, अँधेरे अन्तरालों को

पर्वत की अन्तड़ियों में
काँप उठती हैं दरारें
सभी कुत्ते
और उनके पिल्ले
गर्दन उठाए,
एक सुर में गाते हैं
आकाश तक पहुँचतीं

कमल-सी अधमुँदी उनकी आँखें
पुरोहित
शिला पर संगीत बजाता
सा रे गा मा पा धा नि सा
धुन पर संगति देने
हिलती हैं उनकी दुम, एक लय

तपस्वी एकनाथ का
पवित्र उपहार है
यह शूलीभंजन मन्दिर

एलोरा की गुफाओं में
दुबके पड़े
झुर्रियों भरे अतीत और
सरपट दौड़ते वर्तमान के बीच बसे
औरंगाबाद शहर को

यहाँ के पूर्ण एकानत में
समय से बाहर
कुत्ते और पत्थर रचते हैं
बन्धुत्व के अध्याय
पीड़ा और आनन्द में...

गूँगे का गीत

उसके बेआवाज़
गले की सुरंग से
निकलते कौए
अजनबी हैं
सूरज के इस देश में

कटोरा लिए वह लड़की
झाँकती है
धूसर सन्नाटों के पार
उसके रहस्य
छिपे हैं
गूँगेपन की तहों में
मूरत-सी है वह
भेद टटोलती उसकी आँखें
बाँधे हैं
कितने ही अधीर महासागर।

शब्द...
मृत पैदा हुए शिशुओं-से
आवाज़ के रीते
मौन के खंजर
घूमते हैं उस बेजुबान मुख में
उसके कटोरे में डाल दिये गये
सिक्कों के साथ।
बेजुबान उसके गले से
निकले सन्देश
अपनी चोंच में दबाए
सफेद कबूतर
उड़ते हैं बादलों के बीच
सूरज के देश में।

अँग्रेजी से अनुवाद : रेखा सेठी
मो.: 9810985759

नया ज्ञानोदय

रचनाकार कृपया ध्यान दें :

- जिन रचनाओं के साथ पूरा पता व फोन नम्बर आदि नहीं लिखा होगा, उन पर विचार नहीं किया जाएगा।
- हर अंक विशेष होने की वजह से हम रचनाकारों से सीधे सम्पर्क में हैं। अत: अंक योजना से बाहर की रचनाओं में विलम्ब सम्भावित है।
- रचनाओं की स्वीकृति व अस्वीकृति का निर्णय लगभग तीन माह के अन्दर ले लिया जाता है। जिन रचनाओं के साथ लिफाफा संलग्न नहीं होगा उसे तीन महीने के बाद अस्वीकृत समझें।
- ई-मेल पर भेजी गयी रचनाओं पर निर्णय की सूचना शीघ्र दी जा सकेगी।
- रचनाएँ टंकित हो तथा रचनाकार का सम्पर्क सूत्र यथा पूरा पता, मोबाइल अथवा फोन नम्बर और ई-मेल अवश्य लिखें ताकि सम्पर्क करने में हमें सुविधा हो।
- टंकित रचनाएँ यूनीकोड, कृतिदेव 010 अथवा चाणक्य फॉन्ट में हो तो सुविधा होगी।
- रचनाएँ : nayagyanoday@gmail.com पर ही प्रेषित करें।